शोध सार

प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत असम राज्य के सांस्कृतिक पर्यटन के विकास में अनुवाद व निर्वचन की भूमिका का विशेषण किया गया है। असम एक सांस्कृतिक विविधताओं से परिपूर्ण राज्य है। यहाँ विभिन्न प्रकार के धार्मिक स्थलों के अलावा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थल भी हैं, जैसे- गुवाहाटी में कामाख्या, वशिष्ठ आश्रम, कलाक्षेत्र, उबानंदा; शिवसागर में शिव मंदिर, शिव तालाब, रंगघर; हाजो, तेजपुर, माजुली आदि। असम में अनेक जनजातियाँ रहती हैं, जिनकी अपनी-अपनी सांस्कृतिक परम्पराएँ हैं। इन समस्त सांस्कृतिक विविधताओं को देखने के लिए भारत के अलावा देश विदेश से पर्यटक आते हैं। असम के स्थानीय लोग हिंदी, अंग्रेजी और असमीया भाषा बोलते हैं जबकि असम राज्य में आने वाले पर्यटक गैर-असमीया भाषी होते हैं, जिससे यहाँ उनको अपने विचारों के आदान- प्रदान में भाषाई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस भाषाई समस्याओं को दूर करने में अनुवाद एक महत्वपूर्ण भूमिका

निभा रहा है। असम की असमीया भाषा असम की सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित करती है। पर्यटकों के लिए सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि वे लोग असमीया भाषा व संस्कृति से किस प्रकार परिचित हों। यहाँ आने वाले पर्यटक अनुवाद के माध्यम से असम की संस्कृति को समझते हैं, लेकिन उसके मूल को जानने के लिए निर्वचन की सहायता लेते हैं।

असम राज्य में कुल 141 पंजीकृत पर्यटक गाइड हैं, जो पर्यटकों को असम के विभिन्न सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों के विषय में बताते हैं। असम के पर्यटक गाइड हिंदी, अंग्रेजी और असमीया भाषा जानते हैं। उनमें से कुछ को रूसी, स्पेनिश, फ्रांसीसी, डच आदि भाषाओं का भी थोड़ा ज्ञान है। वे अपनी भाषाई क्षमता के अनुसार पर्यटकों के साथ वार्तालाप करते हैं। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि अन्य देशों से आने वाले पर्यटक असमीया पर्यटक गाइडों की भाषा-क्षमता से संतुष्ट नहीं हो पाते, इसलिए वे अपने देश से दु-भाषिया लेकर आते हैं, जो हिंदी भाषा के भी जानकार होते हैं। ये विदेशी गाइड स्थानीय लोगों की बातों को अपने देश के पर्यटक को उनकी भाषा में बताते हैं। असम के सांस्कृतिक पर्यटन में लगे स्थानीय लोगों द्वारा विदेशी सैलानियों के अलावा गैर-असमीया भाषी पर्यटकों से वार्तालाप के दौरान अनुवाद माध्यम का सामान्यतः प्रयोग किया जाता है।

पर्यटन एक आनंददायक और मनोरंजक यात्रा होती है। पर्यटन स्थलों पर वे समस्त साधन उपलब्ध होते हैं, जिनसे पर्यटक को किसी प्रकार की असुविधा न हो व उनका पूर्ण मनोरंजन हो। पर्यटकों की सुविधाओं के लिए असम में 'असम राज्य पर्यटन विभाग' और 'असम पर्यटन विकास निगम लिमिटेड' मुख्य रूप से कार्य करते हैं, जो पर्यटकों के लिए होटल और आवागमन के साधन उपलब्ध करवाने के अलावा विभिन्न मेलों और उत्सवों का आयोजन करवाते हैं। असम के विभिन्न सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों पर अनेक गैर-सरकारी होटल हैं, जहाँ पर्यटक रुकते हैं। इन होटलों में काम करने वाले कर्मचारी वार्तालाप के दौरान अनुवाद का प्रयोग करते हैं। असम राज्य के होटल उद्योग और यातायात उद्योग से जुड़े लोग पर्यटकों से वार्तालाप करने के लिए अनुवाद और निर्वचन का प्रयोग करते हैं। इन सभी व्यवसायों से जुड़े लोगों में उच्च, मध्यम और निम्न श्रेणी के लोग हैं। इन व्यवसायों से जुड़े उच्च श्रेणी के लोग भाषाई रूप से दक्ष व प्रशिक्षित होते हैं, तो दूसरी तरफ निम्न श्रेणी के लोग टूटी फूटी अंग्रेजी भाषा और निर्वचन के द्वारा पर्यटकों से वार्तालाप करते हैं।

असम राज्य के सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों पर अनुवाद व निर्वचन केवल भाषाई संप्रेषण का माध्यम ही नहीं है, अपितु यह पर्यटन उद्योग से जुड़े विभिन्न वर्गों, जैसे- होटल, यातायात, पर्यटक गाइड, पर्यटन विभाग और स्थानीय बाजार के लोगों के लिए अर्थार्जन का भी एक प्रमुख साधन है। असम के सांस्कृतिक पर्यटन-स्थलों पर अनेक होटल और भोजनालाय हैं, जिनमें काम करने वाले कर्मचारी पर्यटकों से वार्तालाप करने के लिए अनुवाद का प्रयोग करते हैं। उच्च स्तरीय होटलों के संचालक उन्ही कर्मचारियों की नियुक्ति करते हैं, जो भाषाई रूप से दक्ष हों और दु-भाषी हों। इसके साथ सस्ते होटलों के कर्मचारी भी पर्यटकों से वार्तालाप करने के लिए अनुवाद की सहायता लेते हैं। यातायात के साधनों में हवाई मार्ग और रेलमार्ग प्रमुख हैं। हवाई अड्डों पर सूचना फलक से लेकर विमान के अंदर दी जाने वाली सूचनाओं तथा सेवा-वार्तालाप के लिए अनुवाद और आवश्यकतानुसार निर्वचन का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार देखा जाए तो होटलों और विमानों में अनुवाद एवं निर्वचन रोजगार के अवसर उपलब्ध करवा रहा है और सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा दे रहा है।

असम राज्य में सांस्कृतिक पर्यटन और अनुवाद व निर्वचन के बारे में शोध करते समय इस तथ्य की ओर ध्यान गया कि पर्यटकों के आवागमन का मुख्य साधन रेल, बस, टैक्सी, रिक्शा व ऑटो रिक्शा आदि हैं। रेलवे प्रशासन द्वारा स्टेशनों पर मुख्यतः तीन भाषाओं, हिंदी, अंग्रेजी और असमीया भाषा का प्रयोग किया जाता है। ट्रेनों के आवागमन की सूचना का प्रसारण और आरक्षण तालिका भी उक्त तीन भाषाओं में प्रकाशित की जाती है, जिससे पर्यटकों सहित सभी यात्रियों को यात्रा करने में सुविधा में हो। असम में कई ट्रैवल एजेंसियाँ हैं,जो पर्यटकों के लिए विभिन्न प्रकार के टूर पैकेज देती हैं, जिनकी सूचना वे लोग अंग्रेजी और हिंदी भाषा में अखबारों और पम्पलेट्स के माध्यम से देती हैं। इस व्यवसाय से जुड़े अन्य लोगों में बस, रिक्शा, टैक्सी और ऑटो रिक्शा चालक भी अनुवाद और निर्वचन के माध्यम से पर्यटकों से वार्तालाप की कोशिश करते हैं। इस तरह अनुवाद और निर्वचन के माध्यम से वे लोग अपने व्यवसाय संचालित करते हैं।

असम के सांस्कृतिक पर्यटन में अनुवाद और निर्वचन की अनेक महत्वपूर्ण भूमिकाएँ स्पष्ट हैं। असम के सांस्कृतिक पर्यटन-स्थलों पर कार्यरत लोगों और पर्यटकों के बीच संप्रेषण का माध्यम अनुवाद और निर्वचन है। अनुवाद व निर्वचन लोगों को व्यवसाय के अवसर उपलब्ध करवा रहा है। अनुवाद और निर्वचन की एक महत्वपूर्ण

भूमिका यह है कि इनके माध्यम से पर्यटकों को असम की संस्कृति और सांस्कृतिक पर्यट-स्थलों के मूल इतिहास को समझने में आसानी होती है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि अनुवादक जितना प्रभावी तरीके से पर्यटक को असम के सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों के विषय में बताएगा, पर्यटक उतना ही प्रभावित होगा, जिससे वह दोबारा पर्यटन के लिए आएगा। असम राज्य के सांस्कृतिक पर्यटन के विकास में अनुवाद अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए,असम के सांस्कृतिक पर्यटन को भारत के साथ-साथ विश्व पटल पर भी एक महत्वपूर्ण पहचान दिला रहा है।

असम के सांस्कृतिक-पर्यटन के विकास में अनुवाद और निर्वचन की भूमिका का अध्ययन करते समय शोधार्थी उपर्युक्त आशाजनक यथार्थ के साथ ही इस निष्कर्ष पर भी पहुँचा कि असम आने वाले पर्यटकों को भाषा, अनुवाद और निर्वचन संबंधी कुछ समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है।

- अध्ययन में पाया गया कि सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों पर सबसे अधिक असुविधा उन पर्यटकों को होती है, जो असमीया, अंग्रेज़ी और हिंदी नहीं जानते। भारत की अन्य भाषाओं और विदेशी भाषाओं से संबन्धित सांस्कृतिक पर्यटक भाषा संबंधी कठिनाई के प्राय: शिकार होते हैं।
- अध्ययन में पाया गया कि असम के सांस्कृतिक पर्यटन से जुड़े पर्यटक गाइड अनुवाद और निर्वचन में या तो एकदम प्रशिक्षित नहीं हैं अथवा बहुत कम प्रशिक्षित हैं। इस कमी के कारण वे पर्यटकों के साथ प्रभावशाली संवाद स्थापित करने में कठिनाई अनुभव करते हैं।
- अध्ययन में पाया गया कि असम के संस्कृति विभाग और पर्यटन कार्यालयों द्वारा पर्यटक गाइडों के प्रशिक्षण की स्तरीय व्यवस्था नहीं है। पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण-अवधि, कुशल-प्रशिक्षक, प्रयोगात्मक-सुविधा आदि की दृष्टि से अत्याधुनिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता है।
- अध्ययन में पाया गया कि असम के सांस्कृतिक पर्यटन में लगे पंजीकृत पर्यटक गाइडों की संख्या बहुत कम (मात्र एक-सौ इकतालीस) है। सरकारी स्तर पर इस ओर गंभीरतापूर्वक कदम भी नहीं उठाए जा रहे हैं। असम के सांस्कृतिक पर्यटन पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ रहा है।

- अध्ययन में पाया गया कि कला और शिल्प संबंधी स्थानीय उत्पाद बेचने के व्यवसाय में लगे छोटे व्यवसायी भी अनुवाद और निर्वचन में प्रशिक्षित नहीं हैं। वे अपने प्रयास से अन्य भाषाओं का थोड़ा-बहुत व्यवहार सीख कर काम चलाते हैं। इसका असम के सांस्कृतिक पर्यटन के आर्थिक पक्ष पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।
- अध्ययन में पाया गया कि असम में सांस्कृतिक पर्यटन हेतु आने वाले पर्यटकों की संख्या बढ़ तो रही है, लेकिन उसकी दर संतोषजनक नहीं है। असम एक विशाल राज्य है और सांस्कृतिक पर्यटन-स्थलों की संख्या बहुत अधिक है। देश-विदेश के सांस्कृतिक-पर्यटक असम आना चाहते हैं। यह उनकी कम ही सही, लेकिन बढ़ती दर से पता चलता है। लेकिन उन्हें यहाँ आकर अनुवाद और निर्वचन में कुशल तथा भाषा के अच्छे जानकार गाइडों के न मिलने से या तो अपने साथ गाइड लाने पड़ते हैं या आधी-अधूरी जानकारी लेकर वापस जाना पड़ता है।
- अध्ययन में पाया गया कि असम सरकार की सांस्कृतिक पर्यटन के विकास के लिए कोई आधुनिक प्रचार-प्रसार नीति न होने के कारण इतिहास, धर्म, संस्कृति, जन-जीवन, सामाजिक परम्पराओं आदि के संबंध में लिखित सामग्री गिनी-चुनी भाषाओं में ही (मुख्य रूप से असमीया और अंग्रेज़ी में) प्राप्त होती है। उसके अनेक भाषाओं में अनुवाद की व्यवस्था नहीं है। इसी प्रकार सूचनाएँ और विज्ञापन भी कम भाषाओं में ही रहते हैं। इसका असम के सांस्कृतिक पर्यटन पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

शोध-कार्य के परिणामस्वरूप शोधार्थी असम के सांस्कृतिक पर्यटन के विकास के लिए निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत करता है :

- सांस्कृतिक स्थलों और कार्यक्रमों से संबंधित विज्ञापन यथा पंपलेट्स, समाचार पत्रों में दिये जाने वाले विज्ञापन, जगह-जगह पर समारोहों और उत्सवों से संबंधित होर्डिंग्स, ई-विज्ञापन आदि असमिया और अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य विभिन्न भाषाओं में होने चाहिए, जिससे पर्यटकों को होने

वाले उत्सवों/समारोहों आदि के संदर्भ में जानकारी मिल सके और वे उसमें हिस्सा लेकर लाभान्वित हो सकें।

- सांस्कृतिक उत्सवों/समारोहों और सांस्कृतिक महत्व के स्थलों की महत्ता से संबंधित पुस्तकों का अनुवाद अन्य भाषाओं में किया जाना चाहिए, जिससे कि लोग असम और उसकी संस्कृति के बारे में जान सकें तथा स्थान विशेष की महत्ता और उसके पीछे की मान्यताओं को जान और समझ सकें। इसके लिए पर्यटन विभाग, सांस्कृतिक मामलों से संबंधित निदेशालय और जनसंपर्क सूचना विभाग आदि द्वारा पहल की जानी चाहिए। इसके साथ ही अन्य प्रकाशनों को भी इसमें अपनी भूमिका समझकर निभानी चाहिए। सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने की दृष्टि से अनुवाद के लिए विषयों का चयन प्राथमिकता के आधार पर किया जाना चाहिए, जैसे-

- पौराणिक एवं धार्मिक स्थलों की जानकारी।
- ऐतिहासिक स्थानों की जानकारी।
- सामाजिक और लोकजीवन।
- उत्सव, त्योहार, नृत्य, संगीत और खेल।
- स्थानीय उत्पाद एवं कला कौशल।

- संप्रेषण की भाषा पर ध्यान देना चाहिए। संबंधित विभाग के कर्मचारियों को विभिन्न भाषाओं में प्रशिक्षण लेना चाहिए, जिससे कि अनुवाद और निर्वचन माध्यमों का अधिकतम उपयोग किया जा सके और पर्यटकों को कोई भी समस्या न हो। इससे असम राज्य में सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।

- प्रशिक्षण केंद्रों में दिए जा रहे प्रशिक्षण पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। प्रशिक्षण के नाम पर केवल खानापूर्ति नहीं होनी चाहिए, बल्कि पर्यटक गाइड को एकाधिक भाषाओं से संबंध रखने वाले पर्यटकों से संवाद विकसित करने की कला में कुशल बनाना चाहिए।

- पर्यटक गाइडों की संख्या में बढ़ोत्तरी करने के लिए वहाँ के स्थानीय लोगों को संबंधित विभागों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इससे यह सुविधा रहेगी कि वे स्थान विशेष, कार्यक्रम और समारोहों

के पीछे अपनी मान्यताओं, विश्वासों और आस्थाओं को बेहतर ढंग से बता पाएँगे। इस रूप में वे अन्य से बेहतर निर्वचक सिद्ध होंगे।

- इसके साथ ही विश्वविद्यालयों में अनुवाद और निर्वचन से संबंधित पाठ्यक्रम का निर्माण कर उसे लागू किया जाना चाहिए। विश्वविद्यालयों को स्थानीय लोगों को विशेष रूप से प्रशिक्षित करना चाहिए। गाइड प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाषा सिखाने के साथ ही अनुवाद और निर्वचन को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए। इससे असम के समाज और संस्कृति की जानकारी एक से अधिक भाषाओं में उपलब्ध कराई जा सकेगी तथा पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।